भागीदार रहते थे। ऐसे ही एक कार्यकर्ता थे कृष्णकांत, जो प्रचारक जीवन से गृहस्थ जीवन में प्रवेश करना चाहते थे। जीविकोपार्जन के लिए इन्हें कोई मार्ग सूझ नहीं रहा था। नानाजी ने इनका विवाह आयोजित कराया और पति-पत्नी दोनों की शिक्षा एवं संस्कारक्षमता का उपयोग करने के लिए शिशु पाठशाला की कल्पना की। नामकरण किया सरस्वती शिशु मंदिर। इस समय पहला सरस्वती शिशु मंदिर 1949 में नानाजी के मार्गदर्शन में प्रारंभ हुआ, जिसकी शृंखला-सी बन गई।

1952 में पहला आम चुनाव होना था। श्यामाप्रसाद मुखर्जी के 'भारतीय जनसंघ' में संघ ने पं. दीनदयाल उपाध्याय और नानाजी देशमुख को भेजा। नानाजी अपनी पार्टी के कार्य में जुट गए। जनसंघ का काम करते हुए लालबहादुर शास्त्री, डॉ. राममनोहर लोहिया, डॉ. संपूर्णानंद, चौधरी चरण सिंह सरीखे नेताओं से इनके संबंध विकसित हुए। भारतीय जनसंघ के सांगठनिक विस्तार और विकास के लिए दीनदयाल जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया। अपने गहरे साथी दीनदयाल जी की हत्या के पश्चात भी वे अपने मिशन में पूरी दृढ़ता से जुटे रहे। अपने साथी की स्मृति में नानाजी ने 1972 में 'दीनदयाल शोध संस्थान' की स्थापना की और कालांतर में 'मंथन' नामक त्रैमासिक शोध-पत्रिका हिंदी और अंग्रेज़ी में शुरू की।

अपनी विचारधारा और संगठन की सीमाओं का अतिक्रमण कर नानाजी देशमुख अपने दौर के हर बड़े आंदोलन से जुड़ते थे। शर्त यह रहती थी कि उस आंदोलन का मक़सद जनकल्याण और राष्ट्र को सुदृढ़ करना हो। महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी आचार्य विनोबाभावे के 'भूदान' में भी शामिल हुए। नानाजी एक तरफ़ राजनीतिक हस्तक्षेप के जरिए परिवर्तन की ज़मीन तैयार कर रहे थे तो साथ ही रचनात्मक कार्य के लिए भी सोचते-विचारते रहते थे। कारण था सत्ता दल की निरंकुशता और इससे टकराने की कामना वाले विपक्षी दलों का व्यक्तिवाद और अवसरवाद। इसलिए दोनों में इन्हें भारत का भविष्य नहीं दिखता था। इंडियन एक्सप्रेस के स्वामी रामनाथ गोयनका के माध्यम से नानाजी जयप्रकाश नारायण से जुड़े। जेपी के अतीत और वर्तमान ने नानाजी को बेहद प्रभावित किया। आपातकाल के दौरान जे.पी. के व्यक्तिगत सत्ता पाने की कामना से रहित होकर संघर्ष और चिंता ने नानाजी के मन में उनके प्रति श्रद्धा पैदा किया। तिहाड़ जेल में रहते हुए नानाजी का संपर्क चरण सिंह, प्रकाश सिंह बादल आदि विपक्षी नेताओं से हुआ। क़रीब सत्रह महीनों के कारावास में वे इस निष्कर्ष पर पहुँचने लगे कि देश का पुनर्निर्माण राजशक्ति से नहीं अपितु लोक शक्ति से होगा। राजनीतिक संस्कृति विकृत होती जा रही थी। इसे जे.पी. के साथ नानाजी भी महसूस कर रहे थे।

17 फरवरी को इंदिरा गांधी ने लोकसभा चुनाव की घोषणा कर सबको चौंका दिया। तीन दिनों के भीतर 20 फरवरी को जनसंघ, कांग्रेस संगठन, भारतीय लोकदल, सोशलिस्ट पार्टी सहित सभी प्रमुख विपक्षी दलों ने जनता पार्टी का गठन करके उसमें